कक्षा नौवीं

पाठ - 2 (क्षितिज)

ल्हासा की ओर — राहुल सांकृत्यायन

प्र० 1 थोङ्ला के पहले के आखिरी गावँ पहुँचने पर भिखमंगे के वेश मे होने के बावजूद लेखक को ठहरने का उचित स्थान मिला जबकि दूसरी यात्रा के समय भद्र वेश भी उन्हें उचित स्थान नहीं दिला सका। क्यों?

उ० किस जगह ठहरने का स्थान मिलेगा, यह उस वक्त के लोगों की मनोवृत्ति पर निर्भर होता है। थोङ्ला के पहले के आखिरी गावँ में सुमति के जान-पहचान के लोग थे। इसलिए उन्हे भिखमंगे जैसी वेशभूषा होने पर भी अच्छी जगह ठहरने को मिली। लेकिन जब पाँच साल बाद वे उसी रास्ते से वापस आए तब वे भद्र व्यक्ति के वेश में थे तथा घोड़े पर सवार थे इसके बावजूद भी उन्हें एक गरीब व्यक्ति के झोपड़े में ठहरना पड़ा। शाम के वक्त वहाँ के लोग छङ् पीते हैं और अपने होश - हवास खो बैठते हैं।

प्र० 2 उस समय के तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था?

उ० उन दिनों तिब्बत में हथियार रखने का कोई कानून न था इसलिए लोग वहाँ पिस्तौल और बंदूक को लाठी की तरह लिए फिरते थे। इस कारण वहाँ के लोगो को हर समय अपनी जान जाने का भय बना रहता था। वहाँ पर डकैती, डाकुओं का भी आतंक था। वहाँ पर डकैत पहले आदमी को मारते थे और उसके बाद उसका धन लूटते थे।

प्र० 3 लेखक ल्हासा के मार्ग में अपने साथियों से किस कारण पिछड़ गया?

Red Wings
Page No.___ Date ___/___/20___

उ. लङ्कोर से लेखक को घोडे पर बैठकर उतराई करनी थी। लेकिन लेखक का घोड़ा कुछ धीमे चलने लगा। लेखक ने समझा की चढ़ाई की थकावट के कारण ऐसा कर रहा है, और वह उसे मारना नहीं चाहता था और वह बाद में धीरे-धीरे साथियों से बहुत पिछड़ गया और दोन्क्विक्सतो की तरह अपने घोडे पर झूमता हुआ आगे जा रहा था, उसे यह नहीं जान पड़ता था कि घोडा आगे जा रहा है या पीछे। जब लेखक जोर देने लगता, तो वह और भी सुस्त हो जाता। एक जगह दो रास्ते फूट रहे थे। लेखक ने बाएँ दिशा का रास्ता चुन लिया और मील-डेढ़ मील चलता चला गया। फिर आगे एक घर में पूछने से उसे पता लगा कि लङ्कोर का रास्ता दाहिनी दिशा वाला था। फिर लौटकर लेखक ने अपने साथियों से मिलने के लिए उसी रास्ते को पकड़ा

प्र०५ लेखक ने शेकर बिहार में सुमति को उनके यजमानों के पास जाने से क्यों रोका परंतु दूसरी बार रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया ?

उ० शेकर बिहार के आसपास के गावों में सुमति के यजमानों की संख्या बहुत अधिक थी। वे गंडे देने के लिए अपने यजमानों के साथ जाना चाहते थे। इस काम में उन्हें एक हफ्ता-भर लग जाता था। इसलिए लेखक ने सुमति को वहाँ जाने से रोकदिया। परन्तु दूसरी बार लेखक ने सुमति को जाने से नहीं रोका क्योंकि उस समय लेखक हस्तलिखित पोथियों को पढने में डूबा हुआ था। इन्हें पढ़ने के लिए एकांत की आवश्यक्ता थी। इसलिए उसने सुमति को नहीं रोका।

प्र०६ अपनी यात्रा के दौरान लेखक को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ?

उ० अपनी यात्रा के दौरान लेखक को निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ा -:

1. अपनी यात्रा से लौटते समय लेखक को ठहरने के लिए कोई अच्छा स्थान नहीं मिला। इसलिए उसे गरीब आदमी के झोपड़े में रहना पड़ा।

2. लेखक को कई बार भीख माँगने का काम करना पड़ा। ऐसा करने से उसकी जान बच सकी।

3. लेखक का घोड़ा उतराई के समय धीरे-धीरे चल रहा था। इसलिए वह अपने साथियों से पिछड़ गया।

4. लेखक को भार ढोने के लिए कोई भरिया नहीं मिला। इसलिए लेखक को तिब्बत की कड़ी धूप का सामना करना पड़ा।

प्र०6 प्रस्तुत यात्रा वृतांत के आधार पर बताइए कि उस समय का तिब्बती समाज कैसा था?

उ० उस समय तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत सी तकलीफें भी थी और कुछ आराम की बातें भी थी। वहाँ जाति-पाँति छुआछूत का कोई सवाल ही नहीं था। औरतें परदा भी नहीं करती थी। निम्नश्रेणी के भिखमगों को लोग चोरी के डर से घर के अन्दर नहीं आने देते थे। वहाँ के लोग अतिथि का आदर सत्कार दिल खोलकर करते थे। वहाँ के लोग धार्मिक प्रवृति के थे। लेकिन गंडों में भी विश्वास करते थे।

प्र०7 'मैं अब पुस्तकों के भीतर था' नीचे दिए गए विकल्पों में कौन-सा इस वाक्य का अर्थ बतलाता है-

1. लेखक पुस्तक पढने में रम गया।
2. लेखक पुस्तकों की शैल्फ के भीतर चला गया।
3. लेखक के चारों ओर पुस्तकें थी।
4. पुस्तक में लेखक का परिचय और चित्र दिया था।

उ० लेखक पुस्तकें पढ़ने में रम गया।

प्र०8 सुमति के यजमान और अन्य परिचित लोग लगभग हर गाँव में मिले। इस आधार पर आप सुमति के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का चित्रण कर सकते हैं?

उ० जिस मार्ग से लेखक तिब्बत की यात्रा कर रहा था। उस मार्ग में लगभग हर गाँव में उसे सुमति के यजमान मिले। इससे सुमति के व्यक्तित्व के बारे में पता चलता है कि वह उन लोगों के मध्य काफी लोकप्रिय हैं। वहाँ के लोग उसका सम्मान करते हैं। वहाँ उसे धार्मिक व्यक्तित्व समझा जाता है। वह एक मिलनसार व्यक्तित्व भी है।

प्र० हालाँकि उस वक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ भी ख्याल करना चाहिए था। उक्त कथन के आधार पर हमारे आचार-व्यवहार के तरीके वेशभूषा के आधार पर तय होते हैं। आपकी समझ से यह उचित है अथवा अनुचित विचार व्यक्त कीजिए।

उ० हालाँकि अभी भी समाज में वेशभूषा के आधार पर लोगों के आचार - व्यवहार तय होते हैं। परंतु हमारी दृष्टि से यह अनुचित है। व्यक्ति का सम्मान उसके गुणों से होना चाहिए, वेशभूषा से नहीं। जैसे कोई मूर्ख व्यक्ति वेशभूषा अच्छी पहन ले तो वह आदर का पात्र नहीं बन सकता।

प्र०10 यात्रा - वृतांत के आधार पर तिब्बत की भौगोलिक स्थिति का शब्द - चित्र प्रस्तुत करें। वहाँ की स्थिति आपके राज्य / शहर के किस प्रकार भिन्न है?

उ० तिब्बत भारत के उत्तर में स्थित है। डाँडे सबसे खतरनाक जगह होती है। यह सोलह - सत्रह (16-17)

हजार फीट ऊँचे होते है। इनके दोनों तरफ कई-कई मीलों तक कोई गाँव नहीं होता। यहाँ नदियों के मोड़ तथा पहाड़ों के कोनों के कारण दूर-दूर तक आदमी दिखाई नहीं देते। यहाँ हिमालय के कई श्वेत शिखर हैं। यहाँ न बर्फ की सफेदी और न ही किसी तरह की हरियाली है। उत्तर की ओर बहुत कम बर्फ वाली चोटियाँ हैं। यहाँ पर कई मैदान टापू की तरह मालुम होते हैं। तिब्बत की जमीन छोटे-बड़े जागीरदारों में बँटी हुई है। लेकिन हमारे राज्य की अधिकांश भूमि मैदानी है।

प्र०।। आपने किसी स्थान की यात्रा अवश्य की होगी? यात्रा के दौरान हुए अनुभवों को लिखिए।

उ० मुझे गतमाह विद्यालय की ओर से भारत की राजधानी दिल्ली का भ्रमज करने का अवसर मिला। हम सबसे पहले दिल्ली का ऐतिहासिक स्थान "लाल किला" देखने गए। यह लाल पत्थरों से बना है। इसका निर्माण मुगल सम्राट शाहजहाँ ने करवाया था। यह यमुना नदी पर स्थित था परन्तु अब वह नदी कुछ दूर चली गई। इसके एक ओर महात्मा गाधी, जवाहर लाल नेहरू व लाल बहादुर शास्त्री के समाधि स्थल हैं तथा दूसरी ओर ऐतिहासिक बाजार चाँदनी चौक है। किले के बाहर चाँदनी चौक की ओर एक विशाल हरित प्राँगण भी है। यह लाल किला मुगलों की संस्कृती व धरोहर है। हमने यहाँ बादशाहों व बेगमों के पहनने के वस्त्र भी देखे। अब हम दीवाने-ए-आम तथा दीवान-ए-खास की ओर व तख्त-ए-ताऊस की ओर पहुँचे।

प्र०2 यात्रा-वृतांत गद्य साहित्य की एक विधा है। आपकी इस पाठ्यपुस्तक में कौन-सी विधाएँ हैं? प्रस्तुत विधा उनसे किन मायनों में अलग है।

उ० इस पाठ्यपुस्तक में निम्नलिखित विधाएँ है
1. संस्मरण
2. रिपोर्ताज
3. कथा - कहानी
4. हास्य व्यंग्य
यह विधा इस मायने में भिन्न है क्योंकि इसमें किसी यात्रा का वर्णन होता है जबकि अन्य विधाओं में ऐसा नहीं होता।

प्र०13 किसी भी बात को अनेक प्रकार से कहा जा सकता है, जैसे पौ फटने वाली थी कि हम गाँव में थे।
सुबह होने से पहले हम गाँव में थे।
तारों की छाँव रहते - रहते हम गाँव पहुँच गए।
नीचे दिए गए वाक्य को अलग - अलग तरीके से लिखिए -
जान नहीं पड़ता था कि घोड़ा आगे जा रहा है या पीछे।
उ० यह पता नहीं चल रहा था कि घोड़ा आगे जा रहा है या पीछे। घोड़े के आगे पीछे जाने के बारे में पता नहीं चल रहा था।

प्र०14. ऐसे शब्द जो किसी 'अंचल' यानी क्षेत्र विशेष में प्रयुक्त होते हैं उन्हें आंचलिक कहा जाता है। प्रस्तुत पाठ में से आंचलिक शब्द ढूँढकर लिखिए।
उ०
1. चौड़ी
2. छड़
3. कंडे
4. गंडे
5. राहदारी
6. कुची - कुची
7. सत्तू
8. चिरी